Shri Karmarkar: The idea is principally to provide improved seeds.

AUSTRALIAN GIFT OF FLOUR

*811. **Dr. Ram Subhag Singh:** Will the Minister of **Food and Agriculture** be pleased to state whether it is a fact that an Australian shipment of flour to India under the Colombo Plan has been held up aboard the steamer "Mildura" in Sydney harbour for about three months?

The Deputy Minister of Commerce and Industry (Shri Karmarkar): Yes, Sir.

Dr. Ram Subhag Singh: May I know what is the quantity of this Australian shipment?

Shri Karmarkar: I have got the price of it here. It was approximately 240,000 Australian pounds and this had come out of the £37 million, earmarked for the supply of foodgrains under the Colombo Plan.

Dr. Ram Subhag Singh: May I know whether this shipment was allowed to rot or deteriorate and not allowed to be sold?

Shri Karmarkar: Yes, Sir. It got deteriorated and we authorized the Australian Government to sell it for what it was worth.

Dr. Ram Subhag Singh: May I know why this gift shipment was allowed to rot for so long?

Shri Karmarkar: No permission was given for the flour to be allowed to rot, but as a matter of fact there was a change in the ownership of the transporters and that was beyond our control and the particular flour was detained there beyond the time that it was expected to be detained and naturally it rotted and we requested the Australian Government to sell it for us.

जनता एक्सप्रेस

*८१२. **श्री जांगड़े :** क्या रेल मंत्री यह बतलाने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि नागपुर और कलकत्ता के बीच एक जनता एक्सप्रेस चलाने का प्रश्न विचाराधीन रह चुका है; और

(ख) उस लाइन पर किस तिथि से जनता एक्सप्रस के चलने लगने की आशा ?

The Parliamentary Secretary to the Prime Minister (Shri Satish Chandra): (a) No.

(b) For lack of line capacity over a part of the route coupled with paucity of coaching stock and power, there are no early prospects of the introduction of such a train, even if there were traffic justification for it.

श्री जांगड़े : क्या मैं जान सकता हूं कि गत वर्ष श्री संथानम ने नागपुर से कलकत्ता तक ऐक्सप्रेस गाड़ी चलाने का जो विचार प्रकट किया था, उस के बारे में क्या हो रहा है ?

श्री सतीश चन्द्र : श्री संथानम ने ६ अक्टूबर को यह नहीं कहा था कि नागपुर से कलकत्ता तक ट्रेन चलाने का विचार है, बल्कि बम्बई से कलकत्ता तक एक ट्रेन चलाने को कहा था और वह अभी भी हमारा विचार है और वह ट्रेन इलाहाबाद हो कर चलायी जायगी।

श्री जांगड़े : क्या मैं जान सकता हूं कि युद्ध के पहले नागपुर से ले कर बिलासपुर तक जो लोकल ट्रेन चलती थी, उन ट्रेनस् को फिर से चालू करने का विचार है ?

श्री सतीश चन्द्र : मैं नागपुर से बिलासपुर तक की तो नहीं कह सकता, लेकिन यह नागपुर से कलकत्ता तक नहीं चल सकतीं।

श्री जांगड़े : लोकल ट्रेनस् के बारे में मैं जानना चाहता हूं।

श्री सतीश चन्द्र : मुझे इस के बारे में कोई इत्तला नहीं है।

श्री जांगड़े : क्या मैं जान सकता हूं कि नागपुर से कलकत्ता तक बंगाल नागपुर रेलवे की जो मेन लाइन थी, उस में कितनी गाड़ियां . . . . . .

Mr. Speaker: Order, order. He is covering the whole field of railway activities in the past. The question is restricted to only one point.

RAILWAY COACHES AND WAGONS

*813. **Pandit M. B. Bhargava:** Will the Minister of **Railways** be pleased to state:

(a) whether any order for the supply of coaches and wagons was placed with any foreign firm in the current financial year;

(b) if so, what is the number and value for which the order is placed and when the supply is expected in terms of the order placed;

(c) what is the number and value of the coaches and wagons in the process of manufacture in the current financial year in the various workshops in India; and

(d) by what time they are expected to be on the line?

The Parliamentary Secretary to the Prime Minister (Shri Satish Chandra): (a) No.

(b) Does not arise.

(c) About 1,200 coaches valued at approximately Rs. 8 crores and 8,903 wagons valued at approximately Rs. 9·9 crores.

(d) About 800 coaches and 6,790 wagons are expected to be put on line during the current financial year and the balance in the next.

पंडित एम० बी० भार्गव : क्या मंत्री महोदय यह बतलाने की कृपा करेंगे कि कुल तमाम रेलवे पर कितनी कोचेज और वैगनस् की आवश्यकता है ?

श्री सतीश चन्द्र : इस के लिये नोटिस चाहिये ।

पंडित एम० बी० भार्गव : यह जो कोचेज बनाई जा रही हैं, इन में तीसरे दरजे की कितनी हैं और दूसरे दरजे की कितनी हैं ?

श्री सतीश चन्द्र : जो हिन्दुस्तान ऐयरक्राफ्ट लिमिटेड में इस वक्त कोचेज बन रही हैं, उन में ३१७ तीसरे दर्जे की हैं, जर्मनी से २५० वैगनस् का जो इस वक्त आर्डर है, वह सब तीसरे दर्जे के लिये हैं और इन के अलावा बेलजियम और यूनाइटेड किंगडम से मीटर गेज की जो सौ गाड़ियां बनवाई जा रही हैं, वह भी तीसरे दर्जे की हैं ।

पंडित एम० बी० भार्गव : क्या माननीय मंत्री यह बतलायेंगे कि पहले दर्जे की कितनी गाड़ियां देश में और बाहर बनवाई जा रही हैं ?

श्री सतीश चन्द्र : पहले दर्जे की गाड़ियों की गिनती बहुत कम है और उन की संख्या इस वक्त मेरे पास नहीं है ।

पंडित एम० बी० भार्गव : क्या मंत्री महोदय यह बतलाने की कृपा करेंगे कि जैसा मंत्री महोदय ने बतलाया कि पहला दर्जा खत्म किया जा रहा है, तो ऐसी हालत में पहले दजे की और क्यों कोचेज बनवाई जा रही हैं ?

Shri Satish Chandra: As I said, I have no information about the first class coaches just now.

Shri Nambiar: May I know if the coaches and wagons produced in India are being manufactured in full or are re-assembled here?

Shri Satish Chandra: Some material might be imported, but they are being manufactured in this country.

Shri S. G. Parikh: What about the wagon factories at Bharatpur and Okha and have they started construction?

Shri Satish Chandra: I do not know exactly about the work.

श्री एम० एल० द्विवेदी : क्या मैं पूछ सकता हूं कि जब अपने देश में ही यह डिब्बे बनाये जाते हैं तो इन को बाहर से मंगाने की क्यों आवश्यकता हुई ?

श्री सतीश चन्द्र : जितने डिब्बे हमारे यहां बनते हैं, वह हमारे लिये काफ़ी नहीं हैं और उन से हमारा काम नहीं चलता है ।